बुन्देल-विभूति

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया

61380

सहस्त्र चन्द्र दर्शन पर समर्पित अभिनन्दन-ग्रंथ

Scanned with OKEN Scanner

बुन्देल-विभूति
डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया

41330

परामर्श
पं. कैलाश चंद्र पंत
डॉ. श्याम सुन्दर दुबे

संपादक
डॉ. रीता गुप्ता
डॉ. सरोज गुप्ता
डॉ. बहादुर सिंह परमार

अनुज्ञा

Scanned with OKEN Scanner

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटो कापी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक / प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।
किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

ISBN 978-93-86810-55-7

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं 1, वेस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली-110 032
फोन : 011-22825424, 09350809192
www.anuugyabooks.com
email: anuugyabooks@gmail.com

मूल्य : 999.00 रुपये

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

BUNDEL-VIBHUTI : DR. GANGAPRASAD GUPT BARSAINYAN
edited by Dr. Reeta Gupta, Dr. Saroj Gupta & Dr. Bahadur Singh Parmar

G/1330

सम्पादकीय

बुन्देल विभूति : डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी, मूर्धन्य साहित्यकार, समीक्षक, कवि एवं श्रेष्ठ व्यंग्यकार के साथ ऐसे शब्दशिल्पी हैं जिनके चिन्तन से प्रस्फुटित शब्द अद्भुत, ऊर्जावान, श्रेष्ठ, मनोरम एवं वृक्षोचित सम्भावना प्रदान करते हैं। उनके लिए साहित्य रचना साधना व तपस्या की तरह है। साहित्यसर्जक दार्शनिक व आध्यात्मिक चिन्तक डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया जी के लिए उपनिषद्कार के शब्द यथोचित प्रतीत होते हैं "आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रिया वा नेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः।" आत्मक्रीड योगी की आत्मरति से निष्पन्न रचना मानवीय चेतना को ब्रह्मानन्द के अक्षय आयामों से परिचित कराने में नितान्त समर्थ होती है, क्योंकि उस ब्रह्मानंद का दर्शन इन चर्म चक्षुओं से सम्भव नहीं होता।

ज्ञाने विद्यया चैव प्रज्ञा, शाश्वत विवर्धयेत।
यस्य प्रज्ञामयं चक्षुः चक्षुस्मान स नरः स्मृतः।।

अर्थात् ज्ञान और विद्या के द्वारा सदा प्रज्ञा की वृद्धि करते रहना चाहिए। जिसके पास प्रज्ञा रूपी चक्षु हैं वही व्यक्ति वास्तव में चक्षुयुक्त समझा जाता है। समाज और राष्ट्र में किसी व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान व गुणों से ही होती है। बुन्देलखण्ड के गौरव डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया 'यथा नाम तथा गुण' के अनुरूप अपनी कीर्ति की दिव्यता से साहित्य गगनमण्डल को सतत प्रकाशित कर रहे हैं। आपके व्यक्तित्व में हिमालय-सी उच्चता, हृदय में सागर-सा गाम्भीर्य और चिन्तनधारा में गंगा का-सा अम्लान वेग है। आपके व्यक्तित्व की प्रभावक विशेषताओं ने, मानवता के आदर्श को प्रतिष्ठित करने वाले उद्गारों ने तथा श्रेष्ठ व उत्कर्षशालिनी कृतियों ने चुम्बकीय प्रभाव से देश के विद्वान अध्येताओं को अपनी ओर आकर्षित किया है। आप साहित्य क्षेत्र में काफी अनुभवी, सहृदय लेखक, व्यंग्यकार तथा बुन्देली विशेषज्ञ हैं। भारतीय संस्कृति के दीपशिखावाही हैं। तेजस्वी मनस्विता, वर्चस्वी काव्य-प्रतिभा तथा तपस्वी सत्याग्रही-अस्मिता से बुन्देली जनपद की लोकचेतना को प्रबुद्ध करने की अद्भुत क्षमता आपमें है। आपके सम्बन्ध में यह कहना कि साधना ने आपको विद्या वैभव प्रदान किया के स्थान पर यदि यह कहा जाये कि विद्या ने आपको एकान्त साधक व चिन्तक बनाया तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। डॉ. बरसैंया जी के सम्बन्ध में यह शाश्वत सत्य है कि आपने श्रम, साधना और संकल्प शक्ति से

Scanned with OKEN Scanner

U1330

अनुक्रम

सम्पादकीय 5

खंड-1 : परिचय तथा कुछ अपनी : कुछ अपनों की

परिचय 21

प्रथम सोपान – भौंरी से जबलपुर 27

द्वितीय सोपान – रायपुर-निवास की महत्त्वपूर्ण बातें 32

तृतीय सोपान – टीकमगढ़ की प्रमुख उपलब्धियाँ 37

चतुर्थ सोपान – छतरपुर की प्रमुख स्मृतियाँ 42

पंचम सोपान – शैक्षणिक, अकादमिक, साहित्यिक एवं पारिवारिक सोपान 48

मेरे जीवन-साथी – *श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया* 54

मेरे पिता जी – *रजनी खरया, प्राचार्य* 59

सरस्वती के साधक मेरे पापाजी – *डॉ. रीता गुप्ता* 62

सूरज से पापाजी : ऊर्जा से भरे और उजाले से भरपूर – *अभिलाष बरसैंया* 66

आदर्शों और सिद्धान्तों के धनी चाचा जी – *ओमप्रकाश गुप्ता* 73

हमारे ताऊ जी डॉ. बरसैंया – *विराग गुप्ता* 74

गंगा जी का सफरनामा : बाबूगिरी से प्राचार्य तक – *डॉ. गोविन्ददास हूंका* 76

मेरे साहित्य-श्री फूफा जी – *आयुष हूंका* 79

हमारे प्यारे नाना जी 81

साक्षात्कार

सरस्वती के वरदपुत्र से भेंट-वार्ता – *डॉ. सरोज गुप्ता* 83

डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया से साक्षात्कार – *डॉ. बहादुर सिंह परमार* 88

शोध और समीक्षा को समर्पित डॉ. बरसैंया – *श्री राम तिवारी* 94

साहित्य और शिक्षा के लोक-साधक से मुलाकात – *प्रो. सुधीर शर्मा* 103

Scanned with OKEN Scanner

खण्ड–दो : व्यक्ति एक : दृष्टि अनेक

1. आत्मीय सखा डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया' – आचार्य कृष्णकान्त चतुर्वेदी 109
2. मन ऐसो निर्मल भयौ जैसे गंगा नीर – डॉ. सुरेश कुमार वर्मा 117
3. बरसैंया–एक विनोदी व्यक्तित्व – डॉ. ओम प्रकाश त्रिवेदी 122
4. सरस्वती के अथक साधक आचार्य डॉ. 'बरसैंया' – पं. भगवतीधर वाजपेयी 125
5. एक ऐसी आत्मीय : जिसकी मैत्री उपलब्धि बन गयी – कैलाशचन्द्र पन्त 127
6. प्रोफेसर डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया : मेरी दृष्टि में – डॉ. भास्कर प्रसाद पाण्डेय 129
7. मादक वक्तृता के धनी अंकल बरसैंया – डॉ. श्रीकान्त पाण्डेय 132
8. साहित्य मनीषी डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त बरसैंया – पं. कपिल देव तैलंग 134
9. डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया का वैशिष्ट्य – आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल 136
10. साधक व्यक्तित्व : डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया' – डॉ. दुर्गेश दीक्षित 141
11. बरसैंया जी : सुधी पाठक, गुणी व्यक्ति – ललित सुरजन 145
12. बरसैंया जी की जिज्ञासु आँखें – प्रभाकर चौबे 149
13. बुन्देलखण्ड के अन्तःसाक्षी श्री बरसैंया जी – प्रभुदयाल मिश्र 152
14. मनस्वी व्यक्ति डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त – डॉ. कृष्णचन्द्र वर्मा 158
15. लोकवादी समीक्षा-परम्परा के सन्त समीक्षक – डॉ. श्यामसुन्दर दुबे 160
16. डॉ. बरसैंया : 'तुम छत से छाये' – डॉ. सत्येन्द्र शर्मा 165
17. वह कर्ज चुकाता है – डॉ. देवेन्द्र दीपक 175
18. मैंने जितना जाना – विजय बहादुर सिंह 176
19. एक और साहित्यिक गंगोत्री : डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया' – डॉ. रमेश चन्द्र खरे 177
20. डॉ. बरसैंया : माटी से जुड़े संस्कृति-साधक – अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' 180
21. उत्सवधर्मी परम्परा के पुरोधा : डॉ. बरसैंया – डॉ. राधावल्लभ शर्मा 187

Scanned with OKEN Scanner

G1330

22. अभिनन्दनीय एवं अनुकरणीय डॉ. बरसैंया — सुरेन्द्र शर्मा शिरीष 190
23. डॉ. बरसैंया जी की प्रतिभा के विविध आयाम — डॉ. के. एल. जैन 193
24. टीकमगढ़ के साहित्य-जगत को डॉ. बरसैंया का अवदान — हरिविष्णु अवस्थी 196
25. गंगा-सा पावन व्यक्तित्व : डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त बरसैंया — पं. गुणसागर सत्यार्थी 201
26. डॉ. बरसैंया-स्मृति के आईने में — वीरेन्द्र बहादुर खरे 205
27. छतरपुर की पहचान हैं डॉ. बरसैंया — डॉ. बहादुर सिंह परमार 208
28. सरस्वती-पुत्र डॉ. बरसैंया — डॉ. जगदीश रावत 211
29. डॉ. बरसैंया : कुशल संगठक और बेबाक वक्ता — कैलाश मड़बैया 213
30. प्रतिभापुंज गुरुवर डॉ. बरसैंया — डॉ. देवीप्रसाद खरे 216
31. 'नित नवीनता की अनुभूति, उनकी संजीवनी है' — अभिनन्दन गोइल 218
32. एक जिन्दादिल शख्सियत– डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया — एन. डी. सोनी 220
33. निबन्ध और प्रबन्ध के शिल्पी डॉ. बरसैंया — डॉ. लक्ष्मीनारायण गुप्त 'विश्वबन्धु' 224
34. बूढ़ो पति बरसैंया — डॉ. कन्हैयालाल वर्मा 'बिन्दु' 228
35. बुन्देली माथे कौ तिलक – डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया — डॉ. रामनारायण शर्मा 231
36. स्मृति के वातायन से : डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया' — डॉ. (श्रीमती) गायत्री वाजपेयी 235
37. प्रेरणा स्रोत मेरे गुरुवर — डॉ. शोभना जैन 239
38. आदर्श प्राचार्य डॉ. बरसैंया — प्रो. अनल शर्मा 242
39. बट छैंया हैं बरसैंया जी — शिवभूषण सिंह गौतम 245
40. समर्पित समाजसेवी डॉ. बरसैंया — उदय नारायण कनकने 247
41. गहोई समाज के विकास में डॉ. बरसैंया का योगदान — रामप्रकाश गुप्त 250

Scanned with OKEN Scanner

42. मेरे परम मित्र : डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया के कुछ पत्र (छत्तीसगढ़ से लेकर बुन्देलखण्ड तक) — *उदय शंकर दुबे* 253

खण्ड-तीन : कलम की कसौटी पर कृतियाँ

दो शब्द 273

आमुख 275

बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार 279

1. लिखते रहे जुनूं की हिकायाते खूं चका — *सुरेश आचार्य* 280
2. साहित्य के इतिहास में प्रभावी हस्तक्षेप — *श्यामसुन्दर दुबे* 284
3. पुरातन इतिहास पर प्रामाणिक प्रकाश — *राम अधीर* 289
4. अज्ञात लोक-साहित्य का दस्तावेज — *डॉ. लालमणि तिवारी* 291
5. गहन शोध का बेजोड़ नमूना — *डॉ. सुभद्रा राठौर* 294

छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार 300

6. छत्तीसगढ़ के अनुरागी डॉ. बरसैंया जी — *प्रो. शंकर प्रसाद श्रीवास्तव* 300

हिन्दी साहित्य में निबन्ध और निबन्धकार 303

7. हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबन्ध और निबन्धकार — *श्री नारायण परमार* 304

रचना से रचना तक 310

8. समय-सहचर की समीक्षा-यात्रा — *डॉ. सत्येन्द्र शर्मा* 311
9. आलोचना की महत्त्वपूर्ण पुस्तक है — *बहादुर सिंह परमार* 318
10. समीक्षा की साफ-सुथरी दृष्टि — *राम अधीर* 320
11. डॉ. बरसैंया की समीक्षा दृष्टि — *आचार्य भगवत दुबे* 322
12. आलोचना का रचनात्मक हस्तक्षेप — *डॉ. सन्तोष कुमार तिवारी* 327

रचना अनुशीलन

13. सहृदय तथा तटस्थ समीक्षक का प्रमाण — *कमल किशोर गोयनका* 331
14. कृतियों के अन्तर्जगत की सटीक पहचान — *आचार्य भगवत दुबे* 333
15. समीक्षा और आलोचना से अधिक कठिन है अनुशीलन — *राम अधीर* 336

Scanned with OKEN Scanner

G1330

16. पुस्तक में पुस्तकालय का समावेश है— 'रचना अनुशीलन' — *कुँ. शिवभूषण सिंह गौतम* 338

सृजन-विमर्श 341

17. गागर में सागर का आभास कराती है— सृजन-विमर्श — *कुँ. शिवभूषण सिंह गौतम* 342

18. सृजन-विमर्श : कृतित्व का साक्षात्कार — *डॉ. अनीता* 345

चिन्तन-अनुचिन्तन 347

19. चिन्तन-अनुचिन्तन-मौलिक और स्वतन्त्र विचारणा का अभिलेख — *डॉ. किशोरीलाल* 348

आधुनिक काव्य : सन्दर्भ और प्रकृति 350

20. आधुनिक युग की हिन्दी कविता का सन्तुलित विवेचन — *डॉ. मुरारीलाल 'सुरस'* 350

वीर विलास 353

21. अज्ञात ग्रन्थ का तथ्यानुशीलन — *डॉ. भगीरथ मिश्र* 354

22. डॉ. बरसैंया की सुसम्पादित कृति वीर विलास — *डॉ. कान्ति कुमार जैन* 355

23. अँधेरे गर्त से उबारा डॉ. बरसैंया ने — *रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'* 356

24. लोक सम्पदा का एक और उत्खनन — *प्रेम शंकर रघुवंशी* 357

रस विलास 360

25. एक विलुप्त और विस्मृत कवि की खोज — *राम अधीर* 361

कवि विक्रम रचित सुदामा चरित 363

26. बुन्देलखण्डी मिठास और सहजता की कृति सुदामा-चरित — *सतीश मेहता* 364

रूपक और साक्षात्कार 366

27. शिक्षा और साहित्य का दर्पण — *डॉ. अशोक त्रिपाठी* 366

लोक-वाटिका 368

28. लोक-जीवन की तरंगित बानगी — *डॉ. अशोक त्रिपाठी* 368

कर्म और आराधना 371

29. प्रेरणाप्रद निबन्ध का संग्रह— 'कर्म और आराधना' — *डॉ. लक्ष्मीनारायण गुप्त 'विश्वबन्धु'* 372

Scanned with OKEN Scanner

शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग 374

30. भाषा-शिक्षण का सहज मार्ग — *डॉ. सुभद्रा राठौर* 375
31. अरथ अमित अति आखर थोरे — *लक्ष्मीकान्त गर्ग* 379

तुलसी के तेवर 382

32. तुलसी के काव्य-बोध का एक और वातायन — *डॉ. सत्येन्द्र शर्मा* 383

बुन्देलखण्ड का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य 386

33. बुन्देलखण्ड का अन्तर्साक्ष्य — *प्रभुदयाल मिश्र* 387
34. शोध के नये द्वार उद्‌घाटित करने वाली कृति : 'बुन्देलखण्ड का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य' — *डॉ. रामनारायण शर्मा* 391

संवाद साहित्यकारों से 394

35. पत्रों के वृत्त में साहित्य की दुनिया — *डॉ. सत्येन्द्र शर्मा* 395
36. पत्रों से झाँकता साहित्य-जगत — *डॉ. उर्मिला शुक्ल* 401
37. 'संवाद साहित्यकारों से' : एक ऐतिहासिक संग्रह — *डॉ. सुभद्रा राठौर* 405
38. अकृत्रिम अभिव्यक्ति-संवाद साहित्यकारों से — *डॉ. रमेश चन्द खरे* 409
39. उल्लसित और रोमांचित करने वाली जानकारियों से परिपूर्ण पुस्तक—'संवाद साहित्यकारों से' — *डॉ. रामानन्द शर्मा* 413

अथ काटना कुत्ते का भइया जी को 416

40. व्यंग्य की चमक और आँच — *डॉ. कान्ति कुमार जैन* 416
41. जमीनी सच्चाइयों पर कटाक्ष करते कटु सत्य — *हरिप्रकाश 'वत्स'* 419
42. जीवन की विसंगतियों पर प्रहार करती व्यंग्य रचनायें — *डॉ. बहादुर सिंह परमार* 423
43. सार्वजनिक विद्रूपताओं का कोलॉज — *डॉ. सत्येन्द्र शर्मा* 427

निन्दक नियरे राखिये 430

44. 'निन्दक नियरे राखिये' पर एक दृष्टि — *श्री निवास शुक्ल* 430
45. मीठी गोली में दवा देने की भावना — *डॉ. सुरेश आचार्य* 435

Scanned with OKEN Scanner

46. व्यंग्य संकलन पर अपनी दृष्टि — *अशोक त्रिपाठी* 439

अरमान वर पाने का 443

47. 'अरमान वर पाने का'— एक स्वागत-योग्य प्रयास — *राजेन्द्र प्रसाद* 443

खरी-खरी 445

48. डॉ. कमल किशोर गोयनका का पत्र 445
49. अभिव्यंजना साहित्य— 'खरी-खरी' — *डॉ. रामनारायण शर्मा* 447
50. खरी-खरी बातें—छद्म खोटे खलों की — *डॉ. रमेशचन्द्र खरे* 453
51. 'खरी-खरी' से ही कविता जिन्दा है — *डॉ. लखनलाल खरे* 457

कभी-कभी यह भी 461

52. कविता के छुपे रुस्तम डॉ. बरसैंया — *श्री निवास शुक्ल* 461
53. डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त की अनूठी कृति — *सतीश चतुर्वेदी* 467
54. समसामयिक घटनाओं की दिग्दर्शिका — *डॉ. श्रीमती गायत्री वाजपेयी* 471
55. रागात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति — *आचार्य भगवत दुबे* 475
56. राष्ट्र गौरव 479
57. मनोभूमि के विविध रंग 482
58. मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव 483
59. बुन्देलीधारा के अनखुले पृष्ठ 484
60. बुन्देली— एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन 485

खण्ड— चार : अविस्मरणीय क्षण

साहित्यकारों के पत्र **489**

मैथिलीशरण गुप्त के पत्र 489
सियारामशरण गुप्त का पत्र 490
पं. मुकुटधर पाण्डेय का पत्र 491
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के पत्र 496
हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के पत्र 497
डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के पत्र 498
भगीरथ मिश्र के पत्र 499
विद्यानिवास मिश्र के पत्र 500
डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के पत्र 501

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. लक्ष्मीधर मालवीय के पत्र 502
इमरै बंधा का पत्र 505
शिवमंगल सिंह 'सुमन' का पत्र 507
डॉ. किशोरीलाल (नैनी) के पत्र 508
कान्तिकुमार जैन के पत्र 510

सृजन : एक झलक (गद्य) 512

लोक भूमि साहित्य की जन्मभूमि है 512
घन घमण्ड और राम 515
दुराग्रह साहित्य का धर्म नहीं 519
बुढ़ापा 525
अजगर करे न चाकरी... 531

सृजन एक झलक (पद्य) 535

मानव को मानव रहने दो तब मैं जानूँ 535
क्या तुमने उसको देखा है? 536
कभी-कभी यह भी 537
अस्तित्व और आशाओं के पक्षि-शावक 538
प्रतिष्ठा का साँड़ और उड़ती गौरैया 539
आस्था-अनास्था 540
मुझे नींद नहीं आती 541
हवा चली 543
कुछ मुक्तक 544

खंड–1
परिचय तथा कुछ अपनी : कुछ अपनों की

Scanned with OKEN Scanner

61330

परिचय

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया' से सम्बन्धित विवरण

नाम : डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

जन्म स्थान : भौंरी (जिला बाँदा- अब चित्रकूट उ. प्र.)

जन्मतिथि : 6 फरवरी, 1937

सेवा : म. प्र. के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य, स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से 31-12-96 को सेवानिवृत्त।

योग्यता : एम. ए. (हिन्दी)
पी- एच.डी. (सन् 1964) जबलपुर विश्वविद्यालय
विषय : हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबन्ध और निबन्धकार

कृतियाँ :
(1) हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबन्ध और निबन्धकार
(2) छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार
(3) आधुनिक काव्य : सन्दर्भ और प्रकृति
(4) हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार
(5) बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार (शोध-निबन्धों का संग्रह)
(6) चिन्तन-अनुचिन्तन (समीक्षात्मक निबन्ध)
(7) हिन्दी का प्रथम अज्ञात सुदामा चरित्र (सम्पादन)
(8) वीर विलास (आल्हा सम्बन्धी प्राचीनतम पाण्डुलिपि)
(9) अरमान वर पाने का (व्यंग्य लेखों का संग्रह)
(10) निन्दक नियरे राखिये (व्यंग्य लेखों का संग्रह)
(11) अथ काटना कुत्ते का भइया जी को (व्यंग्य-संग्रह)
(12) कर्म और आराधना (चिन्तनपरक आलेख)
(13) रचना से रचना तक (समीक्षात्मक लेखों का संग्रह)
(14) तुलसी के तेवर
(15) रस विलास (सम्पादन)
(16) मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव

Scanned with OKEN Scanner

(17) कभी-कभी यह भी (काव्य-संग्रह)
(18) नारी : एक अध्ययन
(19) बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (सम्पादन)
(20) मानस मनीषा
(21) रूपक और साक्षात्कार
(22) विन्ध्यालोक (सम्पादन)
(23) लोक वाटिका
(24) शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग
(25) रचना अनुशीलन (समीक्षा)
(26) सृजन-विमर्श (समीक्षा)
(27) खरी-खरी (काव्य)
(28) संवाद : साहित्यकारों से
(29) एकांकी संकलन
(30) मध्यकालीन काव्य
(31) बुन्देलखण्ड का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य
(32) बुन्देली धरा के अनखुले पृष्ठ
(33) छत्तीसगढ़ की साहित्यिक-विभूतियाँ
(34) मनोभूमि के विविध रंग
(35) छतरपुर जिले का साहित्यिक गजेटियर (अप्रकाशित)
(36) आठ रूपक (अप्रकाशित)
(37) बुन्देली विविधा

अन्य प्रकाशन : लगभग 200 शोधपरक निबन्धों का देश की प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन तथा अनेक ग्रन्थों का संकलन। समय-समय पर अनेक शोध पत्रिकाओं, स्मारिकाओं व ग्रन्थों का सम्पादन।

शोध निर्देशन : 12 शोध छात्रों को मेरे निर्देशन में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त।

लघु शोध-प्रबन्ध : लगभग 20 शोध-प्रबन्ध निर्देशन में प्रस्तुत।

सम्पादन : 'नव-ज्योति', 'राष्ट्रगौरव', 'संज्ञा', व 'बन्धु' पत्रिकाओं का सम्पादन।

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया, बुन्देलखण्ड में जन्मे, रचे-बसे उन साहित्य तथा संस्कृति के साधकों में हैं, जिन्होंने यहाँ की माटी के सौंधेपन से प्रभावित होकर उसमें अपने चिन्तन, मनन, श्रम की केसरिया गन्ध मिलाकर उसे अति सुवासित किया। विशेष दृष्टि एवं अध्यवसाय से यहाँ की कला-संस्कृति, प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला, लोक-जीवन तथा बुन्देलखण्ड की एक विशिष्ट छवि जनमानस में बनायी। यह संयोग ही है कि वह व्यवसाय से हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तथा समीक्षक रहे, इससे समीक्षा तथा लेखन की विविध शैलियों का उन्होंने उपयोग किया। इस साधना-क्षेत्र में उन्होंने दर्जनाधिक शोध-छात्रों को पी-एच. डी. उपाधि के शोध-प्रबन्ध लिखने में मार्गदर्शन किया, इससे अधिक लघु शोध-प्रबन्ध लिखवाने हेतु मार्गदर्शन किया, उनमें भी बुन्देलखण्ड उनके मनो-मस्तिष्क में मुख्यतया छाया रहा। इस कारण उनकी छवि शिक्षण-क्षेत्र में कुशल शोध-पर्यवेक्षक, सशक्त निबन्धकार, निष्णात समीक्षक तथा अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में स्थापित हुई। अनेक नामचीन संस्थाओं के निदेशक/कर्ता-धर्ता, पत्रिकाओं के कुशल सम्पादक रहे, जिन्होंने उन्हें विविध सम्मान दिलाने में महत्त्वपूर्ण पृष्ठभूमि तैयार की। इससे उन्होंने ही नहीं उन संस्थाओं तथा विभागों ने भी धन्यता प्राप्त की। उनका व्यक्तित्व तथा कृतित्व वरेण्य है।

—इसी पुस्तक से

91830

Rs. 999

9 789386 810557

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली-110032